

**जैसे लोहा लोहे को तेज़ करता है,
वैसे ही एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को तेज़ करता हैनीतिवचन 27:17 - एक कहावत की
कहानीटेड हिल्डेब्रांट और चैटजीपीटी द्वारा**

हर सुबह छह बजे, स्कूल ट्रैक के पास पार्क का रास्ता दो जोड़ी रनिंग शूज़ की लयबद्ध धुन से जीवंत हो उठता था। एक जोड़ी मार्कस की थी, जो एक अनुभवी मैराथन धावक है, जिसके पास पदकों से भरी छाती और प्रशिक्षण पत्रिकाओं से भरी एक बुकशेल्फ़ है। दूसरी जोड़ी जेडन की थी, जो एक हाई स्कूल का सीनियर छात्र है और ट्रैक स्कॉलरशिप पाने की कोशिश कर रहा है। उन्होंने साथ में दौड़ने की योजना नहीं बनाई थी - यह बस हुआ।

मार्कस को हवा की तरह अपने पास से उड़ता हुआ देखकर जेडन ने हर सुबह उसी लूप पर जॉगिंग करना शुरू कर दिया था। मार्कस, दृढ़ निश्चयी लेकिन अनगढ़ किशोर से खुश था, अंततः उसने अपनी गति धीमी कर दी और बातचीत शुरू कर दी।

"क्या आप किसी चीज़ के लिए प्रशिक्षण ले रहे हैं?" मार्कस ने एक ठंडी सुबह पूछा था जब वे स्ट्रेचिंग कर रहे थे।

जेडन ने सिर हिलाया। "कॉलेज। मुझे छात्रवृत्ति चाहिए। मेरे समय बहुत अच्छे नहीं हैं, लेकिन मैं इस पर काम कर रहा हूँ।"

उस दिन से, वे साथ-साथ दौड़े-एक धक्का देकर, दूसरा पीछा करके। मार्कस ने जेडन के फॉर्म की आलोचना की, उसे सांस लेने की लय सिखाई, और हारे और जीते गए रेस की कहानियाँ सुनाई। जेडन ने यह सब स्पंज की तरह अवशोषित कर लिया, उसकी प्रगति जितनी उसने सोची थी उससे कहीं ज़्यादा तेज़ हो गई।

लेकिन यह एकतरफा रास्ता नहीं था।

जेडन की भूख और जोश ने मार्कस में कुछ नया जगा दिया। वह आत्मसंतुष्ट हो गया था, प्रतिस्पर्धा करने के लिए नहीं, बल्कि बनाए रखने के लिए दौड़ रहा था। लेकिन जेडन के साथ दौड़ना उसे याद दिलाता था कि वह केवल फिटनेस के लिए नहीं, बल्कि सपनों का पीछा करता था। उसने फिर से अपनी दौड़ दर्ज करना, स्प्लिट्स को ट्रैक करना और छोटे लक्ष्य निर्धारित करना शुरू कर दिया।

एक सुबह, एक विशेष रूप से कठिन स्प्रिंट अंतराल के बाद, जेडन घास पर गिर गया, साँस फूल रही थी लेकिन मुस्कुरा रहा था। "आप पिछले महीने से ज़्यादा तेज़ हैं।"

मार्कस ने हंसते हुए कहा, "तुम भी ऐसा ही सोचते हो।"

जेडन अपनी तरफ लुढ़क गया। "तुम अभी भी खुद को क्यों धकेलते हो? तुम पहले ही बहुत कुछ जीत चुके हो।"

मार्कस ने जवाब देने से पहले कुछ देर रुककर कहा, "क्योंकि अब तुम मुझे धक्का दे रहे हो।"

जेडन ने आश्चर्य से पलकें झपकाईं। "मैं?"

"आपको लगता है कि अगर आप छात्रवृत्ति के लिए यहां नहीं होते तो मैं सूर्योदय से पहले ही दौड़ लगा रहा होता? आप मुझे याद दिलाते हैं कि मुझमें अभी और भी बहुत कुछ है।"

उस पल ने उनके बीच कुछ मज़बूती ला दी। अब वे सिर्फ़ प्रशिक्षण देने वाले साथी नहीं थे - वे एक-दूसरे को निखार रहे थे।

महीनों बीत गए। जेडन ने अपने मील टाइम में महत्वपूर्ण सेकंड कम कर लिए, मार्कस ने अपने अंतिम ट्रायआउट रन का समय स्काट करके निकाला। जब जेडन ने व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया, तो मार्कस ने उसे पानी की बोतल दी और मुस्कराया। "तुमने यह अर्जित किया है।"

उसे छात्रवृत्ति मिल गई। जिस दिन उसने स्वीकृति पत्र खोला। जेडन ने फिर से समय देखा, उसकी आँखों में अभी भी अविश्वास था। "मैं तुम्हारे बिना यह नहीं कर सकता था।"

"तुम्हें पता चल गया होगा," मार्कस ने कहा, फिर मुस्कराते हुए कहा, "लेकिन शायद इतनी जल्दी नहीं।"

वे सुबह की धूप में खड़े थे, जीवन के अलग-अलग अध्यायों से आए दो धावक, जो एक साथ तय की गई दूरी के कारण बेहतर थे।

मार्कस ने जेडन को बधाई देते हुए गले लगाया। "तुम्हें पता है, एक कहावत है: *जैसे लोहा लोहे को तेज़ करता है, वैसे ही एक इंसान दूसरे इंसान को तेज़ करता है*। तुमने मुझे जितना समझ में आता है, उससे कहीं ज़्यादा तेज़ किया है।"

जेडन मुस्कराया। "लगता है हम दोनों और मजबूत होकर निकले हैं।"

और जब उन्होंने एक और चक्कर लगाया - समय के लिए नहीं, बल्कि दोस्ती के लिए - वे अपने साथ न केवल मजबूत फेफड़े या तेज़ पैर लेकर गए, बल्कि एक गहरी समझ भी: लोग एक-दूसरे को

बेहतर बनाते हैं, एक समय में एक कदम, जैसा कि पुरानी कहावत में कहा गया था:

"जैसे लोहा लोहे को तेज़ करता है, वैसे ही एक व्यक्ति दूसरे को तेज़ करता है" (नीतिवचन 27:17)।